THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-04 | Issue-03 | October-2025
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v4i3.18

थारू समाज में दाह संस्कार : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. श्याम नारायण वर्मा

सहायक आचार्य,समाजशास्त्र, महामाया राजकीय महाविद्यालय, श्रावस्ती।
मेल–shyamnarayanverma2013@gmail.com

सारांश:

यह शोधपत्र थारू समाज में प्रचलित दाह–संस्कार (अंत्येष्टि) की परंपराओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन उत्तर प्रदेश के श्रावस्ती जनपद के चयनित थारू गाँवों में लगभग 15 वर्षों के सहभागी एवं अर्ध–सहभागी अवलोकन तथा साक्षात्कार विधि पर आधारित है। शोध में थारू जनजाति की उत्पत्ति, जनसंख्या, भौगोलिक विस्तार, आजीविका और सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ–साथ उनके मृत्यु–संस्कारों की विस्तृत प्रक्रिया का वर्णन किया गया है। दाह–संस्कार में मृतक को स्नान कराकर, प्रतीकात्मक रूप से सजाकर, जंगल या खेत में दफनाने भोजन सामग्री अर्पण करने तथा सामूहिक सहभागिता जैसी परंपराएँ शामिल हैं। तेरह दिनों तक शोक, भरखरा जैसी रस्में और सामूहिक भोज भी महत्त्वपूर्ण हैं। निष्कर्षतः अध्ययन यह दर्शाता है कि थारू समाज के दाह–संस्कारों पर हिंदू रीति–रिवाजों का स्पष्ट प्रभाव है, फिर भी इनमें स्थानीय सांस्कृतिक विशिष्टता और सामुदायिक एकता प्रमुख रूप से परिलक्षित होती है।

मुख्य शब्द : थारू समाज, दाह–संस्कार (अंत्येष्टि), जनजातियां ।

भारत और नेपाल राष्ट्र के सीमावर्ती इलाकों में सदियों से थारू जनजातियां अपना शांतपूर्ण जीवन व्यतीत करती हुई चली आ रही हैं ऐसा माना जाता है कि थारू जनजातियां राजस्थान के थार इलाकों से विदेशी आक्रांताओं के भय से सुरक्षित स्थानों पर पलायन कर गयीं और भारत नेपाल सीमा पर आकर बस गयीं, ये लोग अपने को महाराणा प्रताप की वंशज भी मानते हैं शायद इसीलिए ये लोग अपने नाम के आगे राना शब्द जोड़ते हैं कठिन परिश्रमी, बेहद ईमानदार यह जनजाति, जिसकी आबादी सम्पूर्ण भारत में लगभग 2.5 लाख और नेपाल में 18,07,124 जो नेपाल की कुल जनसंख्या का लगभग 6.6 प्रतिशत है जिसमें पुरुषों की आबादी 880,513 और महिलाओं की आबादी 926,611 के आस–पास है। यह नेपाल देश की चौथी सबसे बड़ी आबादी वाला समूह है थारू विशेषकर उत्तर प्रदेश में पाये जाते हैं यह उत्तर प्रदेश का तीसरा सबसे बड़ा जनजातीय समूह है। भारत सरकार द्वारा इस समाज को 1961 में अनुसूचित जनजाति का दर्जा प्रदान किया गया था। इनका फैलाव उत्तराखंण्ड और बिहार राज्य तक नेपाल सीमा से सटे तराई इलाकों में है। इनकी आय का मुख्य साधन आखेट, मछली शिकार, पशुपालन, दिहाड़ी मजदूरी और कृषि है। दीपावली पर्व को शोक के रूप में तो होली पर्व को बड़े उल्लास के साथ मनाने वाली थारू जनजाति अपनी संस्कृति और सभ्यता में तमाम अनछुए पहलुओं को संजोये हुए है। पितृसत्तात्मक थारू समाज में कहीं कहीं मातृसत्तात्मकता भी देखने को मिलती है क्योंकि जब

महिलाएं भोजन थाली में लगाने के बाद अपने पैरों से पुरुषों की ओर ढकेलती हैं, गांव में किसी लड़की की शादी में जब बारात गांव से बाहर पहुंचती है तो महिलाएं ही बारात की अगवानी करने जाती हैं ऐसी तमाम परंपराओं में मातृसत्तात्मकता का संपुट नजर आता है। वर्तमान समय में लड़कियों द्वारा अपनी पसन्द का वर चुनने में कोई अड़चन नहीं होती, माता पिता अपनी बेटी की इच्छाओं का पूरा सम्मान करते हुए उसकी पसन्द के लड़के से शादी को राजी हो जाते हैं।

दाहसंस्कारः–

प्रस्तुत अध्ययन विषय मेरे स्वयं के लगभग 15 वर्षों के सहभागी और अर्द्धसहभागी अवलोकन, साक्षात्कार विधि इत्यादि पर आधारित है। यह अध्ययन जनपद श्रावस्ती के थारू गांव मोतीपुर कला, मसहा कला, रनियापुर और भचकाही गांवों पर आधारित है। मेरे द्वारा कई दाह संस्कार प्रक्रियाओं मे भाग लिया गया। थारूओं में हिन्दू समाज की भांति परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु के बाद घर में शोक की लहर होती है मृतक के सगे संबन्धियों, रिश्तेदारों को सूचना दी जाती है उनके आने तक इंतजार किया जाता है मृतक व्यक्ति को नहला धुलाकर बिल्कुल वैसे ही तैयार किया जाता है जैसे शादी के दौरान एक दुल्हे को तैयार किया जाता है, अगर महिला है तो उसे सुहागन की भांति तैयार किया जाता है। तत्पश्चात हरे बांस की मृत्यु शैय्या (जिसे थारू बोली में मांझी कहा जाता है) का निर्माण किया जाता है या कभी–कभी उसके अभाव में मृतक व्यक्ति जिस चारपाई पर लेटता था उसको उसी चारपाई को उल्टा करके दरी आदि डालकर लिटा दिया जाता है।

मृतक व्यक्ति को मांझी (मृत्यु शैय्या) पर रखकर फूल माला अर्पित करते थारू परिजन

पूरी तैयारी के बाद पास के दाह संस्कार स्थल अगर पास जंगल है तो जंगल ले जाते हैं नहीं तो अपने खेत में दफनाते हैं उक्त निर्धारित स्थल पर समस्त सगे सम्बंधी, परिजन, शवयात्रा में शामिल होते हैं साथ में एक घड़ा पानी, तमाम खाद्य सामग्री जैसे चावल, दाल, हल्दी, प्याज, आलू, मक्का, लहसुन, मसाला, दो घड़ा माचिस, लकड़ी, कुछ खरपतवार, नमक, इत्यादि लेकर चलते हैं।

दाह संस्कार मे प्रयोग होने वाली सामग्री को ले जाते हुए थारू लोग

समस्त परिजन, सगे सम्बन्धी दाह संस्कार स्थल की ओर खाद्य सामग्री ले जाते हुए

मृतक व्यक्ति को पास के जंगल में दफन की तैयारी, साथ में मैं स्वयं

थारू मृतक को सभी लोग जंगल या खेत में लेकर पहुंचने के बाद कब्र जोकि गांव के ही कुछ लोगों द्वारा पहले से ही तैयार की जा रही होती है के पास मृतक शरीर को रखकर उपस्थित समस्त जन अपनी–अपनी सामर्थ्यानुसार मरे हुए व्यक्ति के मस्तिष्क को छुआकर दस रूपये बीस रूपये पचास रूपये पास में रखी पोलीथिन की थैली में डालते जाते हैं मैंने यह प्रक्रिया पूर्ण करने में खुद भूमिका निभायी परन्तु किसी को भी पचास रूपये से अधिक देते हुए नहीं देखा शायद बड़ी रकम थारू नहीं दे पाते शायद इसके पीछे उनकी आर्थिक स्थिति जिम्मेदार हो। जब मैने बात–चीत कर यह जानना चाहा कि यह जमा रकम कौन लेगा, किस मद में खर्च होगी तो पता चला कि जिसके द्वारा दाहसंस्कार कराया जायेगा

यह जमा रकम उसकी होती है। दफन करने से पहले मृतक शरीर के पास यही कोई दस बीस फीट की दूरी पर मिट्टी के टुकड़ों को जोड़कर दो चूल्हे बनाये जाते हैं जिस पर साथ लाये दो घड़े को रखकर उसमें जितने भी लोग वहां उपस्थित होते हैं और अपने साथ खाद्य सामग्री ले गये होते हैं(मैं इस रस्म के बारे में अनभिज्ञ था लिहाजा मैं अपने साथ किसी भी प्रकार की खाद्य सामग्री नहीं ले जा सका) सभी चालव, हल्दी प्याज, मिर्च, दाल, मसाला, लहसुन इत्यादि डालते हैं निश्चय ही लोगों की संख्या अधिक होने के कारण पात्र खाद्य सामग्री से भर जाता है फिर भी लोग प्रमीकात्मक तरीके से उसी घड़े में सामग्री डालते जाते हैं भले ही वह बाहर गिर जाये, सामग्री डालने के बाद चूल्हे के नीचे खरपतवार व लकड़ी को जलाया जाता है ऐसी मान्यता है कि उक्त सामग्री पककर तैयार होगी और मृतात्मा को प्राप्त होगी। जितनी खाद्य सामग्री प्रतीकात्मक रूप से पकायी जाती है उससे कहीं अधिक सामग्री लोगों द्वारा इक्ट्ठा कर ली जाती है शव यात्रा में यह अनिवार्य रस्म सी लगती है क्योंकि मैंने समस्त थारू भाइयों के हाथ में कुछ न कुछ खाद्य सामग्री देखी जो साथ लेकर चल रहे थे। इक्ट्ठा खाद्य सामग्री आस–पास के गद्दी या अन्य कोई गरीब व्यक्ति द्वारा ले जाया जाता है जो दाह संस्कार प्रक्रिया में लगा रहता है उक्त रस्म की तस्वीर–

प्रतीकात्मक रूप से मृतक व्यक्ति के लिए भोजन तैयार किये जाने की तस्वीर

उपरोक्त रस्म की निर्वहन के बाद कब्र में नमक आदि डालकर मृतक शरीर को रख दिया जाता है फिर समस्त उपस्थित जन मिट्टी को कब्र में डालते हैं पूरी कब्र को मिट्टी से भर दिया जाता है ऊपर से कटीली झाड़ियों को रख दिया जाता है ताकि कोई जंगली जानवर कब्र की मिट्टी न हटा सके और शव को नुकसान न पहुंचा सके।

लाश दफन करने से पहले तैयार कब्र में नमक डालते हुए थारू परिजन

सभी लोग घर वापसी से पहले किसी ट्यूबेल, नल, या फिर तालाब में स्नान करते हैं फिर अपने–अपने घरों को वापस आ जाते हैं। तीसरे दिन समस्त सगे सम्बन्धी बाल बनवाते हैं जिसे थारू बोली में (भरखर) कहते हैं भरखरा रस्म के दिन भी थारू मृत व्यक्ति की कब्र के पास जाकर खाने पीने का सामान रखते हैं। ऐसी मान्यता उनमे भी पायी जाती है कि मृतात्मा को यह सामग्री प्राप्त होगी जिसे (सीधा अर्पित करना भी कहा जाता है) शाम को सुअर का मांस पकाया जाता है भोजन में मांस और स्वयं द्वारा निर्मित शराब परोसी जाती है। इस समय भी समस्त नाते रिश्तेदार उपस्थित होकर भोजन और शराब का सेवन करते हैं थारू समाज में यह शोक के रूप में 13 दिन तक मनाया जाता है इस दौरान कई अनुष्ठानों जैसे एकादशगात्र, द्वादशगात्र इत्यादि किये जाते हैं। चाहे वह खुशी का समय हो या फिर गम का समय हो शराब का विशेष प्रचलन है इनमें कहावत भी है **'जहां थारू वहां दारू'** यह दावत अपनी अपनी सामर्थ्य के अनुसार दो तीन दिन तक चलती रहती हैं आम बोल–चाल की भाषा में शांति भोज या तेरहवीं जैसे शब्दों का थारू लोग प्रयोग नहीं करते। इसे एक भोज के रूप में सम्पन्न करते हैं थारू लोगों में भी इस प्रकार की रस्मों को अपने मृतात्मा की शांति के लिए किया जाता हैं।

निष्कर्षः–

थारू समाज पर हिन्दू रीतिरिवाजों का असर आसानी से देखा जा सकता है चाहे वह नेपाल राष्ट्र में रहने वाली थारू जनजाति हो या फिर भारत में हिन्दू राष्ट्र की मान्यता प्राप्त नेपाल, और हिन्दू बहुल भारतीय समाज का प्रभाव सामान्य सी बात है कि थारू उससे अलग नहीं रह सकता इसलिए दाह संस्कार की प्रक्रिया में बहुत कुछ हिन्दू परम्परा और मान्यता का अंश देख सकते हैं जैसे थारू केवल मृत शरीर को जमीन में दफन ही नहीं करते बल्कि वे जलाते भी हैं, जलाने के बाद शरीर के कुछ अवशेष और राख को ये लोग भी नदी में प्रवाहित करते हैं। तेरह दिनों तक शोक मनाते हैं इस प्रक्रिया में कुल देवता का भी विशेष महत्व है इनकी मान्यता है कि कुल देवता हमारी कदम–कदम पर रक्षा करते हैं हमारे परिवार में सुख शांति लाते हैं मृतात्मा को भी शांति प्रदान करते हैं।

किसी भी समाज का अन्तिम सत्य मृत्यु है इस मान्यता से थारू भी रूबरू होतें हैं इसलिए अपने मन को तसल्ली देने के लिए इस सत्य को याद करते हैं और कष्ट को भुलाने के लिए विविध कर्मकाण्डों को अंजाम देते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

01. जनजातीये भारत : नदीम हसनैन, भारत बुक सेन्टर, लखनऊ।

02. समकालीन भारतीय समाजः एक समाजशास्त्रीय परिदृष्य, नदीम हसनैन, भारत बुक सेन्टर, लखनऊ।

03. मानव और संस्कृतिः श्यामाचरण दुबे,राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली इलाहाबाद पटना–1993

04. सांस्कृतिक मानवशास्त्रः मैलविल जे.हर्सकोवित्स, विवेक प्रकाशन 7–यू0ए0, जवाहर नगर, दिल्ली–110007

05. सामाजिक शोध एवं सांख्यिकीः रवीन्द्र नाथ मुकर्जी, विवेक प्रकाशन, पोस्ट बाक्स–2169 दिल्ली–110007

06. स्वयं का सहभागी, अर्धसहभागी अवलोकन।

07. थारू विकीपीडिया।

08. सामाजिक मानवशास्त्रः 2005 डॉ. धर्मवीर महाजन, अर्जुन पब्लिशिंक हाऊस 4831/24 प्रहलाद गली, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली–110002

Cite this Article:

डा. श्याम नारायण वर्मा,"थारू समाज में दाह संस्कार: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन" The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, pp.142–147. https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v4i3.18

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ. श्याम नारायण वर्मा

For publication of research paper title

थारू समाज में दाह संस्कार : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-04, Issue-03, Month October, Year-2025.

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v4i3.18